कक्षा -12 (हिंदी)

पाठ -1 सूरदास

तैयार कर्ता व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

विनय पद

सप्रसंग व्याख्या :-

चरण कमल बन्दौ हरि राई,
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै,अंधे को सब कछु दरसाई।
बहिरौ सुनै मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय, बार बार बन्दौ तिहीं पाई ।।

शब्दार्थ : चरण कमल- कमल रूपी चरण। बन्दौ - वंदना करता हूँ। हरि - श्री कृष्ण । जाकी - जिनकी। पंगु - जिसके पैर में विकृति (खराबी) हो । गिरि - पहाड़ । **लंघै**- पार कर जाता है। धराई- धारण करके। दरसाई - दिखाई देने लगता है। मूक - गूंगा। पुनि - फिर से। रंक - अति निर्धन, कंगाल। तिहिं - उन । पाई- चरण

प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक के सूरदास के 'विनय पद' से ली गयी हैं । इनमें सूरदास जी ने श्री कृष्ण जी के चरणों का गुणगान किया है।

व्याख्या : सूरदास कहते हैं कि मैं श्री हरि अर्थात श्री कृष्ण के चरण कमलों की वंदना करता हूँ, जिनकी कृपा से पंगु (जिसके पैर में विकृति हो) भी पहाड़ को पार करने में समर्थ हो जाता है, अंधे को सब कुछ दिखाई देने लगता है, बहिरा सुनने लगता है और मूक व्यक्ति पुन: बोलने लगता है, अति निर्धन भी सिर पर राजा की तरह

छत्र धारण करके चलने वाला हो जाता है, सूरदास जी कहते हैं कि मैं अपने उस करुणामय स्वामी के चरणों की बार-बार वन्दना करता हूँ।

भावार्थ : भगवान सर्वशक्तिमान हैं। जिसे उनकी कृपा प्राप्त हो जाए, उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं होता। वे प्रत्येक असम्भव कार्य को भी संभव बना देते हैं।

प्रभु मोरे अवगुन चित्त न धरौ।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करौ ।।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलोहि नीर भरौ।
जब दोनों मिलि एक बरन भये, सुरसरि नाम परौ ।।
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो ।
पारस गुन अवगुन नहिं चितवत कंचन करत खरो ।।
यह माया भ्रम जाल कहावत सूरदास सगरो।
अबकि बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रन जात टरो ।।

शब्दार्थ: मोरे -मेरे। अवगुन - दोष। चित्त न धरौ- मन में ने लाएं। समदरसी - एक समान देखने वाला। तिहारो- तुम्हारा। नार - नाला। नीर - जल । बरन - रंग। मणि जो लोहे को सुन्दर स्वर्ण बना देती है। चितवत - देखती। कंचन - सोना । बधिक - शिकारी, हत्यारा। पारस - लोहे से सोना बनाने वाला एक कल्पित पत्थर । सुरसरि - गंगा। सगरो - समस्त । बेर - दफा,बार । प्रन -प्रण,प्रतिज्ञा। टरो - टला जाता है, झूठा ।

प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक के सूरदास के 'विनय पद' से ली गयी हैं । इनमें सूरदास जी श्री कृष्ण जी से अपने उद्धार की प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या : सूरदास जी भगवान कृष्ण से प्रार्थना करते हुए कहते हैं- हे ईश्वर ! आप मेरे अवगुणों/बुराइयों को मन में न लाएं अर्थात उनकी ओर तनिक भी ध्यान न दें । आप तो जगत में समदर्शी के नाम से विख्यात हैं। आपके लिए सभी बराबर हैं। यदि आप चाहें हो तो मेरा कल्याण कर सकते हैं , संसार रूपी सागर से पार कर सकते हैं । आप अपने समदर्शिता रूपी गुण को ध्यान में रखते हुए मेरा उद्धार करें । एक साफ़ जल से भरी हुई नदी होती है, दूसरा गंदे पानी से भरा हुआ नाला होता है। जब दोनों गंगा नदी में मिल जाते हैं तो उसका भी नाम सुरसरि अर्थात गंगा नदी पड़ जाता है। जिस प्रकार एक लोहा किसी पूजा/ पूजा गृह में रखा जाता है, और एक लोहा शिकारी के घर में जानवरों को मारने के साधन के रूप में पड़ा है। पारस पत्थर देव पूजा घर में पड़े लोहे के गुण को और शिकारी के लोहे के दोष को नहीं देखता। वह तो दोनों लोहों को सुन्दर उत्तम सोना बना देता है। सूरदास जी अपने प्रभु को कहते हैं- हे ईश्वर, जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब भ्रम और माया जाल है। सब झूठा है, आडम्बर है, अत: हे ईश्वर ! इस बार मुझे भवसागर से पार उतार दो अन्यथा आपका समदर्शिता व पतित पावनता का प्रण टल जाएगा । अत: अपने प्रण को स्मरण रखें।

भावार्थ : सूरदास जी प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उनके अवगुणों की ओर ध्यान न देकर उन्हें भवसागर से पार उतारें ।

वात्सल्य भाव

3. खेलन अब मेरी जात बलैया।
जबहिं मोहि देखत लरिकन संग तबहिं खिझत बल भैया।।
मोसों कहत तात वसुदेव को देवकी तेरी मैया।

मोल लियो कछु दे वसुदेव को करि करि जतन बहैया ।।
अब बाबा कहि कहत नंद को जसुमति को कहै मैया।
ऐसे हि कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलौं खिसैया ।।
पाछे नन्द सुनत है ठाढ़े, हँसत हँसत उर लैया।
'सूर' नंद बलरामहिं धिरक्यो सुनि मन हरख कन्हैया ।।

शब्दार्थ- बलैया - बला। लरिकन संग - लड़कों के साथ। मोसों- मुझ से। ठाढ़े - खड़े। बहैया - बहुत। खिसैया - लज्जित होकर। उर - छाती, हृदय। मन हरख - मन में प्रसन्नता होना। धिरक्यो-झिड़कना ।

प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक के सूरदास के 'वात्सल्य भाव' के पदों से ली गयी हैं ।इसमें श्री कृष्ण द्वारा अपनी माता से बलराम के द्वारा उसे चिढ़ाये जाने की शिकायत का वर्णन किया गया है।

व्याख्या : माता यशोदा से बाल कृष्ण कहते हैं- हे माता, खेलने अब मेरी बला जाती है अर्थात मैं अब खेलने नहीं जाऊँगा ।वे कहते हैं कि जब भी भैया बलराम मुझे लड़कों के साथ देखते हैं तो वे खीझते हैं। बड़े भाई मुझ से कहते हैं कि वसुदेव तेरा पिता हैं और देवकी तेरी माता हैं । हमने वसुदेव को कुछ देकर तुझे खरीदा है और यत्न करके तुझे बड़ा किया है। अब तुम नन्द को बाबा कहता हो और यशोदा को माता कहता हो । ऐसे ही कहकर सभी मुझे खिझाते रहते हैं। तब मैं खीझकर वहाँ से चला आता हूँ । पीछे खड़े हुए नन्द श्री कृष्ण की सारी बातें सुन रहे थे। उन्होनें हँसते-हँसते श्री कृष्ण को गले से लगा लिया। सूरदास कहते हैं कि नन्द ने बलराम को झिड़का, जिसे सुन कर श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए।

भावार्थ : श्री कृष्ण जी का बड़े भाई की शिकायत करना और नन्द बाबा से बलराम को झिड़कियाँ पड़ने पर श्रीकृष्ण की खुशी का ठिकाना न रहना, उनके बाल स्वभाव को प्रकट करता है।

4. मैया मेरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे मधुवन मोहिं पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहियन को छोटो छींको केहि बिधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लपटायो ।।
तू जननी मति की अति भोरी इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु उपजि है जान परायो जायो ।।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
'सूरदास' तब विहँसि जसोदा लै उर कण्ठ लगायो ।।

शब्दार्थ : भोर - सवेरा। भयो- होते ही। गैयन - गायों । मोही -मुझ को। पठायो - भेज दिया था। भटक्यो- भटकता रहा। बंसीबट- वह वृक्ष जहाँ श्री कृष्ण बांसुरी बजाते थे। बहियन को छोटो - छोटी भुजाओं का। बरबस- ज़बरदस्ती। लपटायो - लगा दिया।मति- बुद्धि। भोरी- भोली। पतियायो - बातों में आकर विश्वास कर लेना । जिय - हृदय, दिल। कछु - कुछ। भेद - फर्क। लकुटि - लाठी। कमरिया - कंबली। विहँसि- हँसकर।

प्रसंग : ये पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक के सूरदास के 'वात्सल्य भाव' के पदों से ली गयी हैं। श्री कृष्ण जी माखन चोरी करते पकड़े गए किंतु बड़ी चतुराई अपनी माता से अपनी सफाई प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या : हे मेरी माँ , मैने माखन नहीं खाया है। वे माँ से कहते हैं कि सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे मधुवन भेज दिया था। चार पहर मैं बंसीबट भटकता रहा और शाम होने पर घर आया हूँ। मैं छोटा सा बालक हूँ और मेरी भुजाएँ भी छोटी-छोटी हैं । फिर मैं किस प्रकार छींके तक पहुँच सकता हूँ ? हे माँ ! सारे ग्वाले मेरे वैर पड़े हुए हैं, यही कारण है कि उन्होंने बलपूर्वक मेरे मुँह पर माखन लगा दिया है(ताकि मैं पकड़ा जाऊँ)। वे आगे कहते हैं कि हे माता ! तू तो बड़ी भोली-भाली है, इसलिए इनके कहने में आ गई है। तुम्हारे हृदय में मेरे प्रति कुछ फर्क सा आ गया है। ऐसा लगता है कि तू मुझे दूसरे का बेटा समझ बैठी है। अब श्री कृष्ण रूठते हुए कहते हैं कि यह लो अपनी लाठी और कंबली। तुमने मुझे बहुत नाच नचाए हैं। सूरदास जी कहते हैं, यह सब कुछ सुनकर माता यशोदा ने हँसते हुए श्री कृष्ण को अपने हृदय से लगा लिया।

भावार्थ : सूरदास जी ने श्री कृष्ण के माध्यम से बाल सुलभ चतुराई का बड़े अनूठे ढंग से परिचय दिया है।

अभ्यास के प्रश्न उत्तर

(क) लगभग 40 शब्दों में उत्तर दें:

प्रश्न 1. विनय पद' के आधार पर सूरदास की भक्ति भावना को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

उत्तर- सूरदास के 'विनय पद' में सूरदास की श्री कृष्ण के प्रति असीम भक्ति भावना देखने को मिलती है। उनके आराध्य श्री कृष्ण में असंभव को संभव करने की अपार क्षमता है। वे जिस पर कृपा करते हैं, उसके सब कष्टों का निवारण कर देते हैं। उनकी कृपा से पंगु पर्वत लांघ सकता है,नेत्रहीन देख सकता है, बहरा फिर से सुन सकता है और रंक राजा बन सकता है। इस प्रकार सूरदास के स्वामी

कृष्ण बड़े ही कृपालु हैं। वे अपने भक्तों पर सदा कृपा करते हैं। सूरदास जी कहते हैं- हे ईश्वर ! आप मेरे अवगुणों को मन में न लाकर मेरा उद्धार करें।

प्रश्न 2. 'खेलन अब मेरी जात बलैया' में श्री कृष्ण खेलने क्यों नहीं जाना चाहते हैं ? संकलित पद के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर- श्री कृष्ण खेलने इसलिए नहीं जाते हैं क्योंकि उनके बड़े भाई बलराम उनको लड़कों के संग देखकर खीझते हैं । वे माँ से शिकायत करते हैं कि मुझे बलराम भैया चिढ़ाते हैं कि वसुदेव पिता हैं और देवकी तेरी माता हैं। हमने वसुदेव को कुछ देकर तुम्हें मोल लिया हुआ है। अब तुम नन्द को बाबा कहता हो और यशोदा को मैया कहता हो । इस प्रकार कहकर बलराम भैया मुझे खिझाते हैं। इस लिए श्री कृष्ण खेलने जाना नहीं चाहते।

प्रश्न 3. 'जिय तेरे कछु उपजि है जान परायो जायो' पंक्ति में श्री कृष्ण माँ यशोदा से क्या कहना चाहते हैं ? 'परायो जायो' की व्याख्या करते श्री कृष्ण जन्म की घटना का वर्णन करो।

उत्तर- श्री कृष्ण वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। इनका जन्म मथुरा

में कंस की जेल में हुआ था। कंस को आकाशवाणी हुई थी कि तेरी बहन का आठवाँ बेटा तेरा काल होगा। यह सुनते ही कंस ने वसुदेव और देवकी को जेल में डाल दिया। कंस ने देवकी की सभी संतानों को मार दिया किंतु आठवाँ पुत्र कृष्ण पैदा हुए। तब सभी पहरेदार मूर्छित हो गए । जेल के ताले टूट गए। रातों रात वसुदेव यमुना पार करके गोकुल गए और यशोदा की उसी समय उत्पन्न पुत्री बदल कर वापस

लौट आए। इससे स्पष्ट है कि कृष्ण यशोदा नन्द के पुत्र नहीं थे, वसुदेव व देवकी के पुत्र थे। इसी का वर्णन इस पद में किया गया है।

प्रश्न 4. सूरदास ने बाल क्रीड़ा का मनोवैज्ञानिक रूप से कैसे वर्णन किया है?

उत्तर- सूरदास ने अपने काव्य में बाल सुलभ क्रीड़ाओं का मनोवैज्ञानिक रूप से वर्णन किया है। श्री कृष्ण के माध्यम से उन्होंने बालकों की प्रकृति का अद्‌वितीय वर्णन किया है। उनका वर्णन सजीव व स्वाभाविक प्रतीत होता है। श्री कृष्ण का बलराम की शिकायत करना, बलराम को झिड़की पड़ने पर कृष्ण जी का मन ही मन खुश होना, माखन चोरी करके खाने पर भी झूठ बोलना आदि बाल चेष्टाओं का सूरदास ने बड़ा ही स्वाभाविक व मनोवैज्ञानिक रूप से वर्णन किया है।

==========

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल
एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)
स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी और पंजाबी)

==========